विनोद कुमार शुक्ल

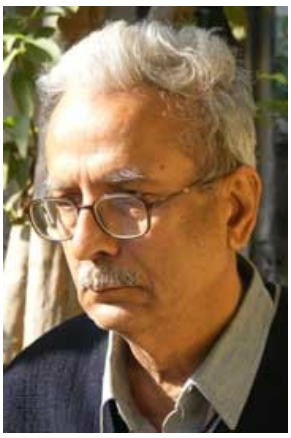

हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था

हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था
व्यक्ति को मैं नहीं जानता था
हताशा को जानता था
इसलिए मैं उस व्यक्ति के पास गया
मैंने हाथ बढ़ाया
मेरा हाथ पकड़कर वह खड़ा हुआ
मुझे वह नहीं जानता था
मेरे हाथ बढ़ाने को जानता था
हम दोनों साथ चले
दोनों एक दूसरे को नहीं जानते थे
साथ चलने को जानते थे ।

Novelist and poet Vinod Kumar Shukla was born on new year's day, 1937. His first poetry collection, लगभग जयहिंद, appeared in 1971, his second, वह आदमी चला गया नया गरम कोट पहनकर विचार की तरह, a decade later. Our poem is from अतिरिक्त नहीं, 2000.